शोध मंथन Vol. XIV No.III June-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान

प्राप्तिः 13.09.2023
स्वीकृतः 15.09.2023

डॉ० प्रताप कुमार
एसो0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
वी०वी० (पी०जी०) कॉलेज, शामली
ईमेलः *prtapsoroha@gmail.com*

52

सारांश

भारत में आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई। वर्तमान समय में भारतीय समाज में आर्य समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोधपत्र में भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज को मानने वाले या किसी भी प्रकार से आर्य समाज से प्रभावित होने वाले लोगों का योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। शोध पत्र से जो आर्य समाज का योगदान दिखाई दिया, वह बहुत ही महत्व का है। शोध पत्र में अनेक ऐसे आन्दोलनकर्त्ता मिले जो आर्य समाजी नहीं लगते थे लेकिन जब शोध किया गया तो पाया हमारे बहुत से स्वतन्त्रता सेनानी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज से प्रभावित थे। आर्य समाज ने अनेकों स्वतन्त्रता आन्दोलनों की योजना बनाई और योजनाबद्ध तरीके से उन्हें सफल बनाने का प्रयास किया। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को एक अखिल भारतीय मोड दिया और उन्होने विभाजनों के लिए नहीं बल्कि समरसता के लिए काम किया। आर्य समाज ने अपने सामाजिक कार्यो और आन्दोलनों के द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोग प्रदान किया और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नेताओं के साथ मिलकर देश को स्वतन्त्रता की दिशा में आगे बढाने में मदद की।

मुख्य बिन्दु

आर्य समाज, उपनिवेशवाद, स्वतन्त्रता, साम्राज्यवाद, रियासते, स्वतन्त्रता आन्दोलन, प्रतिनिधित्व।

भारत में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती आध्यात्मिक चेतना के मार्टिन लूथर थे, जिस प्रकार लूथर ने नारा दिया 'बाईबिल की ओर लौट चलो' ठीक उसी प्रकार भारतीय परिपेक्ष्य मे स्वामीजी ने नारा दिया कि 'वेदों की ओर लौटो' इस धार्मिक नारोंका उद्देश्य धर्म में फैली कुरीतियों को मिटाकर समाज सुधार और देशभक्ति था। दयानन्द जी ने भारत में महिलाओं तथा दलितो के उद्धार के लिए धर्म युद्ध चलाया तथा शिक्षा पर बल दिया।

भारत मे राष्ट्रवाद यूरोप के पुनजार्गरण और सुधार आन्दोलन जैसा नही था बल्कि भारत मे ब्रिटिश उपनिवेशवाद की नीतियों, शोषण और व्यवस्था के कारण उत्पन्न हुई स्थिति के कारण प्रारम्भ हुआ। 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की, स्वामी जी के अनुसार 1857 की क्रान्ति की विफलता का मुख्य कारण देशी रियासतो का आन्दोलन से अलग रहना था। अतः देशी रियासतों को स्वामी जी ने अपना कार्य क्षेत्र बनाया, कई

राजाओ–राजपूतना ने दयानन्द सरस्वती का सम्मान किया तथा कई राजा उनके शिष्य बने। राजस्थान के कईराजा जिनमें प्रमुख महाराणा सज्जन सिंह, राव नाहरसिंह तथा जोधपुर के राजा अजीत सिंह उनके विशेष रूप से सबसे प्रिय शिष्य रहे।

उपनिवेशवादी नीतियों और शोषण के कारण भारत मे विदेशी संस्कृति और विदेशी धर्म के विरोध ने एक नये स्वरूप जिसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते है को विकसित किया, भारत के गौरव को महान रूप मे प्रसारित कर तथा भारतीय धर्म मुख्य तौर पर ईसाई धर्म के विरुद्ध हिन्दू धर्म को श्रेष्ठ बताया गया और जनता को इस देश की संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए जागरूक किया। भारत मे अनेक धर्म तथा संस्कृति के लोग रहते है उन्हें उनकी धार्मिक व सांस्कृतिक की गौरवमयी ऐतिहासिक याद दिला पुनर्जागरण और धार्मिक–संस्कृति की गौरवमयी भावना अनेक समुदायों में उत्पन्न होने लगी।

स्वामी जी ने जिस आर्य समाज की स्थापना की आगे चलकर आर्य समाज मुख्यतः दो भागो में बंट गया। एक वर्ग दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज तथा दूसरा वर्ग गुरुकुल की विचारधारा पर चल पड़े। इसी के साथ यहाँ उल्लेखनीय है कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज ने एक संस्था के रूप मे तो नही परंतु सहसंस्था के रूप में उसके अधिकतर सदस्यों ने अपने व्यक्तिगत प्रयास से प्रमुख भूमिका निभाई।

सत्याग्रह द्वारा योगदान

गाँधी जी के गुरू गोपाल कृष्ण गोखले थे, राजनीतिक स्वतन्त्रता का विचार गोखले को अपने गुरु रानाडे से मिला, लेकिन रानाड़े को यह विचार उनके गुरु दयानन्द जी से प्राप्त हुआ। इस प्रकार अहिंसावादी सत्याग्रह जैसे विचार गाँधी जी को स्वामी दयानन्द जी से ही मिले, यह बात अलग है कि गाँधी जी और महर्शि के हिन्दू–मुस्लिम विचार एक दूसरे से भिन्न थे। इसका कारण गाँधी जी को पाश्चात्य शिक्षा से प्राप्त चिन्तन था। बाद मे चलकर स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन में कांग्रेस के प्रभावशाली नेताओ में सबसे प्रमुख नाम लाला लाजपत राय का आता है जिन्हें पंजाब केसरी के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा देशबन्धु गुप्ता, घनश्याम सिंह गुप्त, महाशय कृष्ण, सिन्ध के ताराचन्द, हैदराबाद के पं0 नरेन्द्र, उत्तर प्रदेश के चौ0 चरण सिंह, गोविन्द बल्लभ पन्त, चन्द्रभानु गुप्त, लाल बहादुर शास्त्री, हरियाणा के भगवानदेव, राजस्थान के चान्दकरण शारदा, पंजाब के चौ. देवव्रतवैध रामगोपाल, अजीत सिंह सहित सभी के परिवार जन इत्यादि सभी लोग स्वाधीनता की लड़ाई की प्रेरणा आर्य समाज से लेते थे। दादाभाई नौरोजी ने भी 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़कर उससे प्रेरणाली।

सशस्त्र आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान

आमतौर परस्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में सत्याग्रह के साथ–साथ क्रान्तिकारी सशस्त्र आन्दोलन भी चल रहा था, उनमें से अधिकतर क्रान्तिकारी नेताओं पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव पड़ा, उसका मुख्य कारण आर्य समाज धर्म और जाति की संकीर्ण विचारधारा को तोड़कर एक ऐसे समाज की सोचता था जहाँ अंधविश्वास, कुरीति का नामों निशान न हो, आर्य समाज अपनी महान परम्परा और संस्कृति को महान बता आगे बढ़ा तभी उसका समाज मे खासतौर पर उत्तर भारत सहित देश के तमाम क्षेत्रों मे प्रभाव बढ़ा।

इस प्रकार दयानन्द जी के अमर शिष्य क्रान्तिकारियों के पितामह कहे जाने वाले श्री. श्याम कृष्ण वर्मा का नाम सबसे पहले आता है। श्याम को दयानन्द ने ही विदेश भेजा था वहा जाकर श्याम

जी ने 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की, बाद के वर्षों में यह क्रान्तिकारियो का तीर्थस्थल बन गया। इनकी प्रेरणास्वरूप सावरकर विदेश गये, बाद मे अण्डमान के काला पानी की सजा के दौरान वे कैदियों को 'सत्यार्थ प्रकाश' पढाया करते थे, बाद मे सावरकर के शिष्य मदनलाल ढींगरा बने थे, मदन लाल ने लंदन में कर्जन को मौत के घाट उतारकर भारत माता के अपमान का बदला लिया। ये सभी आर्य समाजी परिवार मे पैदा हुए। इसके अतिरिक्त वर्षो तक विदेशो में रहकर भारत के लिए स्वतन्त्रता की अलख जगाने वाले राजा महेन्द्र प्रताप जी भी आर्य समाजी थे। प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के लिए गदर पार्टी ने एक योजना बनाई परन्तु किसी कारण वश इसका भेद खुल गया तथा वह योजना असफसल हुई। उस समय विद्रोह के उपरान्त अनेक क्रान्तिकारियो को फाँसी की सजा हुई, इनमे राजस्थान के प्रतापसिंह बारहट, पंजाब के मोहनलाल पाठक, जगतराम हरियाणवी आदि सभी आर्य समाजी थे। इसी क्रम मे 'काकोरी केस' के पं० राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह तथा विष्णु शरण दुबलिश पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव था। स्वामी सोमदेव जी आर्यसमाज के उपदेशक थे जिनके द्वारा आर्य समाज मन्दिर शाहजहॉपुर मे इनकी शिक्षा दीक्षा दी, पं० बिस्मिल प्रतिदिन हवन यज्ञ करने वालो में से एक थे। रोशनसिंह और विष्णुशरण दुबलिश आर्य समाज के सदस्य थे।

शहीद भगत सिंह के दादा अर्जुन सिंह एक कट्टर आर्यसमाजी थे, भगतसिंह के चाचा अचिन्त्य राम जी और पिता किसन सिंह भी आर्य समाजी थे। कमीशन के सामने गवाही देते कर हुए उनके चाचा ने कहा था कि मै तो आर्यसमाजी रिति–रिवाज से सुखदेश की अत्येष्टि करता।

भगत सिंह ने जब सांडर्स को गोली मारी तब वह जाकर लाहौर डी0ए0वी0 कालिज में रूके उन्होने अपने गुरु लाला लाजपत राय की साइमन कमीशन के विरोध के दौरान हुए लाठी चार्ज में हुई मौत का बदला लिया।

भारत छोडो आन्दोलन तथा आजाद हिन्द सेना

देश के स्वतन्त्रता संग्राम की लम्बी यात्रा मे महर्षि दयानंद के अनुयायियों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। लाहौर के डी0ए0वी0 कालेज मे पुलिस ने छात्रों पर गोलीयॉ चलवाई, गुरूकुल डोरली (मेरठ) पर ताला लगा दिया, नरेला में आर्य समाज द्वारा हवन कर रहे 70 लोगों को पकड़कर जेल मे डाल दिया। श्री कालूराम को नागपुर में पकडकर फॉसी दे दी गयी। स्वामी धर्मानन्द तथा इनके पुत्र हरिदत्त सहित स्वामी ईशानन्द को लालकिले में बन्द कर दिया था इस प्रकार इस आन्दोलन में लोगो ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

इसी क्रम मे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया इस सेना के मुख्य तीन नायको मेसे सहगल आर्य समाजी परिवार से ही थे। जब लालकिले मे आजाद हिन्द फौज पर मुकदमा चला तब बचाव पक्ष द्वारा जो वकीलो की एक समिति बनी थी उसके दीवान बद्रीदास तथा बख्शी टेकचन्द ने आर्य समाजी के रूप में अपना योगदान दिया।

इस प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन मे शिक्षण संस्थाओं जिसमें डी0ए0वी0 कालेज लाहौर, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, गुरुकुल डौरली मेरठ, रोहतक, राजस्थान, हैदराबाद मे निजाम के विरुद्ध सहित तमाम आन्दोलन मे इनसे पढ़े–लिखे आर्य समाजियो ने अपना–2 योगदान दिया। आज आजादी का 75वाँ अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इस लेख के द्वारा हमने बहुत से क्रान्तिकारियों का उल्लेख किया जिनका आर्य समाज से गहरा सम्बन्ध रहा परन्तु पूर्ण भरसक प्रयास

के बावजूद भी देश के बहुत से महान ज्ञात तथा अज्ञात क्रान्तिकारी ऐसे हुए है जिनका स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन बहुत बड़ा योगदान रहा है।

भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ने समाज में जातिवाद, धार्मिक अंधविश्वासो और विशेष रूप से ब्राह्मणों के शास्त्रों के विरूद्ध आवाज बुलन्द की गयी। दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के द्वारा भारतीय समाज को आधुनिकता, समानता और विज्ञान में विश्वास की दिशा में प्रेरित किया। आर्य समाज ने समाज सुधार और समाज शुद्धि के लिए अनेक प्रयास किये, इन प्रयासों में मुख्य जाति प्रथा और वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तथा इन्हें समाज से उखाडने के लिए संघर्ष किया तथा सभी को समान अवसर प्रदान करने की मांग की। आर्य समाज के लोग अनुसूचित जातियों के उत्थान समाज में उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए प्रतिबन्ध थे। समाज के सभी वर्गो तक शिक्षा को पहुंचाने का प्रयास किया। आर्य समाज ने स्त्रियों की शिक्षा और समाज में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित किया ताकि वह समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सके। आर्य समाज ने सामाजिक सुधार और जागरूकता कार्यक्रम द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने के लिए सभी जातियों में शिक्षा के लिए स्कूल और कॉलेज खोलने का प्रयास किया। आर्य समाज के सदस्यों ने स्वदेशी आन्दोलन में भागीदार बनकर राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी भूमिका निभाई। आर्य समाज का भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में बहुत बडा योगदान है। आर्य समाज ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होने लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

आर्य समाज ने गणराज्य की मांग को अपने आन्दोलनों और सामाजिक कार्यो के माध्यम से प्रोत्साहित किया। आर्य समाज ने समझाया कि भारत का शासन जनता के हाथों में हो और लोगों का नियन्त्रण उनके चुने गए प्रतिनिधियो के पास हो। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गणराज्य की मांग को प्रतिनिधित्व और स्वाधीनता के साथ जोडा। समाज में समानता की मांग की जो गणराज्य द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। गणराज्य के साथ ही स्वतन्त्रता और स्वराज की मांग की। उन्होने एक ऐसे संविधान की आवश्यकता बताई जो समाज के सभी वर्गो के अधिकारों को सुरक्षित करे। आर्य समाज के नेताओं ने गणराज्य की मांग के माध्यम से भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से सुधार करने की प्रेरणा दी।

आर्य समाज ने भारतीय आन्दोलन में यथासम्भव सहयोग प्रदान किया, आर्य समाज ने विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाए जिनमें स्वतंत्रता आन्दोलन को महत्वपूर्ण बताया। आर्य समाज ने अनेकों कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों के आत्मविश्वास को बढावा दिया और उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोगी बनाने का प्रयास किया। आर्य समाज ने अनेकों स्वतन्त्रता आन्दोलन के कार्यक्रमों की येाजना बनाई और उनके समर्थन में योगदान दिया। आर्य समाज ने सत्याग्रह के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग किया और नेताओं के विश्वास में बल दिया। आर्य समाज ने जाति और वर्ण के विरोध में सहयोग किया और समाज को एकता की दिशा मे प्रेरित किया, जो स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए महत्वपूर्ण था। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के समर्थन में एक अखिल भारतीय मोड दिया और उन्होने विभाजनों के बजाय समरसता की दिशा में काम किया। आर्य समाज ने अपने सामाजिक कार्यो और आन्दोलनों के द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोग प्रदान

किया और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नेताओं के साथ मिलकर देश को स्वतन्त्रता की दिशा में आगे बढने में मदद की।

सन्दर्भ

1. नारंग, ए०एस०. (1992). "भारतीय शासन और राजनीति''. नई दिल्ली।
2. जैन, पुखराज., फडिया, बी०एल०. (2013). 'राजनीति विज्ञान'. साहित्य भवन पब्लिकेशन्सः आगरा।
3. भारतीय, भवानीलाल. (1984). 'आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी'. वैदिक पुस्तकालयः अजमेर।
4. सरस्वती, दयानन्द. (2013). 'वृहद् सत्यार्थ प्रकाश'. रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन।
5. व्यास, प्रसाद मणिधर. (2013). 'महात्मा की छाया में'. (संपादक इला रमेश भट्ट) सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन।
6. लाजपतराय, लाला. (2017). 'दा आर्य समाज'. प्रभात प्रकाशन।
7. विद्यालंकार, सत्यकेतु. (2014). 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास'. श्री सरस्वती सदन।
8. कश्यप, सुभाष. (2020). 'हमारी राजनीतिक व्यवस्था'. नेशनल बुक ट्रस्टः नई दिल्ली।
9. https://rashtriyashiksha.com.
10. https://www.aryasamajonline.co.in.
11. https://www.vedrishi.com.
12. Hindivivek.org (https://hindivivek.org).
13. विभिन्न समाचार पत्र जैसे दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान आदि से अलग–अलग दिनाँक के समाचार पत्रों का सहयोग लिया।
14. इंटरनेट जैसे आधुनिक साधनो का भी सहयोग लिया।